

3. कबीर दास का कहना है कि काम धीरे धीरे होता है । उसके लिए धैर्य की आवश्यकता है । इसके लिए उदाहरण देकर कबीर कहते हैं कि माली के सौ घड़ा पानी सींचने पर भी किसी भी पेड़ में समय के पहले जल्दी से फल नहीं लग जाते । इसलिए ऋतु की प्रतीक्षा करनी पड़ती है । वक्त के आने से ही पेड़ में फल लगते हैं ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) साँच या सत्य के बारे में कबीर ने क्या कहा है ?

(ख) बुराई करनेवालों की भलाई क्यों करनी चाहिए ?

(ग) धीरे-धीरे सबकुछ कैसे होता है – इसके लिए कवि ने कौन सा उदाहरण दिया है ?

2. निम्नलिखित पदोंके अर्थ दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ।

(ख) जो तोको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल ।

(ग) माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) किसके बराबर तप नहीं है ?

(ख) झूठ के बराबर क्या नहीं है ?

(ग) जिसके हृदय में साँच है, उसके हृदय में कौन होते हैं ?

- (घ) झूठ की तुलना किसके साथ की गई है ?
- (ङ) साँच की तुलना किसके साथ की गई है ?
- (च) जो तेरे रास्तेपर काँटा बोता है, तुझे उसके लिए क्या करना चाहिए ?
- (छ) पेड़ में कब फल लगते हैं ?
- (ज) कौन सौ घड़े पानी सींचता है ?
- (झ) इन दोहों के रचयिता कौन हैं ?
- (ञ) प्रथम दोहे में 'आप' शब्द का क्या अर्थ है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत या विलोम शब्द लिखिए :

साँच, पाप, बुरा, धीर, काँटा

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुन कर लिखिए :

बराबर, झूठ, पाप, हृदय, फूल, घड़ा, ऋतु

(मौसम, समान, कलुष, दिल, पुष्प, घट)

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

पाप, फूल, फल, माली, घड़ा, काँटा, ऋतु

4. इन शब्दों के खड़ी बोली - रूप लिखिए :

साँच, जाके, हिरदै, तोको, बुबै, बाको, होय



सूरदास

कवि परिचय :

भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि सूरदास हिन्दी के सूर्य जैसे तेजस्वी कवि हैं। उनका जन्म सन् 1478 में दिल्ली के निकट सीही गाँव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ। वे अंधे थे, पर मालूम पड़ता है कि वे जन्मांध नहीं थे। मथुरा और आगरा के बीच यमुना नदी के तटपर स्थित गऊघाट पर उन्होंने संगीत, काव्य और शास्त्र का अभ्यास किया और विनय के भाव से पदों की रचना की। आगे चलकर वे बल्लभाचार्य के शिष्य बन गये और ब्रज जाकर गोवर्धन के पास पारसोली नामक जगह पर अपना स्थायी निवास बनाकर पद लिखते रहे।

सूरदास मानव-मन के बड़े पारखी थे। वात्सल्य भाव के तो वे मर्मज्ञ थे। श्रीमद् भागवत महापुराण के आधार पर रचित उनका विशाल ग्रंथ 'सूर सागर' हिन्दी की अमूल्य निधि है। ये बच्चों के, माताओं के, साधियों के, नारी और पुरुषों के मनोभावों के पारंगम कवि थे।

यह पद :

प्रस्तुत पाठ में महाकवि सूरदास द्वारा रचित कृष्ण की बाललीला के दो पदों को रखा गया है। ये पद 'सूर सागर' से संकलित हैं।

पद

1. मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो ।
मोसों कहत मोल को लीन्हों, तू जसुमति कब जायो ॥
कहा कहाँ एही रिस के मारे, खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, कौन है तुमरो तात ॥
गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तू कत स्याम सरीर ।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देते बलवीर ॥
तू मोही को मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै ।
मोहन मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै ॥
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत ।
सूर स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ॥